प्रातः क्लास 5/10/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चों को रोज़2 सावधानी जरूर देनी होती है। कौन सी? सेफ्टी फर्स्ट। सेफ्टी क्या है? याद की यात्रा से। तुम बहुत सेफ रहते हो। मूल बात है बच्चों के लिए यह। बाप ने समझाया है तुम बच्चे जितना याद की यात्रा में तत्पर रहेंगे उतनी खुशी भी रहेगी और मैनर्स, चलन, कैरेक्टर्स भी ठीक रहेगी। क्योंकि पावन भी बनना है। कैरेक्टर्स सुधारना है। अपनी जांच करनी है मेरा कैरेक्टर्स किसको दुख देने जैसा तो नहीं है या कोई देह–अभिमान तो नहीं आ जाता है। यह अच्छी रीत अपनी जांच करनी है। बाप बैठ बच्चों को पढ़ाते हैं। तुम बच्चे पढ़ते भी हो फिर पढ़ाते भी हो। बेहद का बाप सिर्फ पढ़ाते हैं। बाकी तो सभी हैं देहधारी। उसमें सारी दुनिया आ जाती है। एक बाप ही विदेही है। वह तुम बच्चों को कहते हैं कि तुमको भी विदेही बनना है। मैं आया हूँ तुमको विदेही बनाने लिए। पवित्र बनकर ही वहाँ जावेंगे। छी–छी को तो साथ नहीं ले जावेंगे। इसलिए पहले2 मंत्र ही यह देते हैं। माया को वश करने का मंत्र है, पवित्र होने का भी मंत्र है। इस मंत्र में बहुत खूबियाँ भरी हुई है। इनसे ही पवित्र बनना है। मनुष्य से देवता बनना है। जरूर हम ही देवी–देवता थे। इसलिए बाप कहते हैं अपनी सेफ्टी चाहो, मजबूत महावीर बनना चाहो तो यह पुरुषार्थ करो। बाप तो शिक्षा देते रहेंगे। ड्रामा अनुसार बिल्कुल ठीक ही चल रहा है। फिर आगे के लिए भी समझाते रहेंगे। याद की यात्रा में कमज़ोर नहीं बनना है। भल अन्दर घर में रहने वाले हैं; परन्तु बहुत ही कच्चे हैं। बाप ने समझाया है बाहर रहने वाले अन्दर रहने वालों को जीत लेते हैं। अर्जुन का मिसाल है ना। वह फेल हो गया। बाहर वाला जीत गया। ऐसे कुछ कहानी है। बाहर वाले बांधेली गोपिकाएँ खास करके वह जितना याद करती हैं उतना घर में रहने वाले नहीं करते; क्योंकि उन्हों को तरफन रहती है शिवबाबा से मिलने की। जो मिल जाते हैं उनको जैसे पेट भर जाता है। वह बहुत याद करते2 बहुत ऊँच पद पा सकते हैं अन्दर वालों से। देखा जाता है अच्छे2 बड़े सेन्टर्स सम्भालने वाली मुख्य याद की यात्रा में कमजोर हैं। जौहर बहुत अच्छा चाहिए ज्ञान तलवार में। जौहर न होने कारण किसको तीर लगता ही नहीं, पूरा मरते ही नहीं। बच्चे कोशिश करते हैं ज्ञान का बाण लगाकर बाप का बनाने वा मरजीवा बनाने; परन्तु मरते नहीं है तो जरूर ज्ञान तलवार में गरबड़ है। बाबा भल जानते हैं ड्रामा बिल्कुल एक्युरेट चल रहा है; परन्तु आगे के लिए समझाते तो रहेंगे ना। हरेक अपने दिल से पूछे हम कहाँ तक याद करते हैं। याद से ही बल आवेगा। इसलिए कहा जाता है ज्ञान तलवार में जौहर चाहिए। ज्ञान तो बहुत सहज रीति समझा सकते हो। जितना2 याद में रहेंगे उतना ही बड़े मीठे बनते जावेंगे। तुम सतोप्रधान थे तो बहुत मीठे थे। अभी फिर सतोप्रधान बनना है। बहुत मीठा बनना है। स्वभाव भी बहुत मीठा होना है। कब रंज न होना चाहिए। ऐसा वातावरण न हो जो कोई रंज हो। कोई भी रंज न हो ऐसी कोशिश करनी है; क्योंकि यह ईश्वरीय कालेज स्थापन करने की सर्विस बहुत ऊँची है। विश्व विद्यालय तो भारत में बहुत गाये जाते हैं। वास्तव में वह है नहीं। विश्व–विद्यालय तो एक ही होता है। बाप ही आकर सभी को मुक्ति–जीवनमुक्ति देते हैं। बाप जानते हैं सारी दुनिया के जो भी मनुष्य मात्र हैं सभी खत्म होने हैं। बाप को बुलाया भी इसलिए है कि इस छी छी दुनिया का खात्मा करो, नई दुनिया की स्थापना करो। बच्चे भी समझते हैं बरोबर बाप आया हुआ है। अभी माया का पॉम्प कितना है। फॉल ऑफ पॉम्पिया का खेल भी दिखाते हैं। बड़े2 मकान बन रहे हैं। यह है पाम्प। सतयुग में इतने 18 मंजिल, 40 मंजिल मकान नहीं बनते हैं। यहाँ बनते हैं क्योंकि जगह बहुत कम है रहने लिए। विनाश जब होता है तब शोभा भी पाते हैं। सभी बड़े2 मकान गिर पड़ते हैं। आगे इतने बड़े2 मकान नहीं बनते थे। बम्स जब छोड़ेंगे तो गिरेंगे ऐसे जैसे कि तास के पत्ते गिरते हैं। इनका मतलब यह नहीं कि यही मरेंगे गिरेंगे बाकी दूसरे रह जावेंगे। नहीं। जो जहाँ होगा। चाहे समुद्र पर होगा, पृथ्वी पर होगा, आकाश पर होगा, झाड़ों पर होंगे, उड़ते होंगे सभी खत्म हो जावेंगे। यह पुरानी दुनिया है ना। 84 लाख योनि(याँ) हैं। यह सभी खत्म हो जाने वाले हैं। वहाँ नई दुनिया में कुछ होगा ही नहीं। न इतने मनुष्य होंगे, न मच्छर

जीत आदि होंगे। यहाँ तो ढेर के ढेर हैं। अभी तुम बच्चे यह देवता बनते हो। तो वहाँ हर चीज़ सतोप्रधान होती है। यहाँ भी बड़े आदमी के घर में जावेंगे तो बड़ी सफाई आदि रहती है तुम तो सबसे बड़े आदमी हो। बड़े देवता बनने वाले हो। बड़े आदमी भी नहीं कहेंगे। तुम बड़े देवताएँ बनते हो। यह कोई नई बात नहीं। 5000 वर्ष पहले भी तुम बने थे नम्बरवार। यह इतना किचड़ा आदि वहाँ कुछ नहीं होगा। बच्चों को बड़ी खुशी होनी चाहिए हम बहुत बड़े ऊँच देवता बनते हैं। एक ही बाप हमको पढ़ाने वाला है जो हमको बहुत ऊँच बनाते हैं। पढ़ाई में हमेशा नम्बरवार पोजीशन वाले होते हैं। कोई कम पढ़ते हैं, कोई जास्ती पढ़ते हैं। अभी बच्चे पुरुषार्थ कर रहे हैं, बड़े2 सेन्टर्स खोल रहे हैं इसलिए कि बड़ों को मालूम पड़े भारत का प्राचीन योग यह गाया जाता है। खास विलायत वालों को जास्ती उत्कंठा होती है राजयोग सीखने की। भारतवासी तो तमोप्रधान बुद्धि हैं, वह फिर भी तमो बुद्धि हैं। इसलिए उन्हों को शौक रहता है भारत का प्राचीन राजयोग सीखने। भारत का प्राचीन राजयोग नामी–ग्रामी है, जिससे ही भारत स्वर्ग बना था। बहुत थोड़े आते हैं जो आकर पूरी रीति समझते हैं। स्वर्ग अथवा हेविन पास्ट हो गया है, सो फिर होगा जरूर। हेविन अथवा पैराडाइज़ है सबसे वन्डर आफ दी वर्ल्ड। स्वर्ग का कितना नाम बाला है। स्वर्ग और नर्क, शिवालय और वैश्यालय। तुम बच्चों को अभी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार याद है कि हमको शिवालय में जाना है। वहाँ जाने लिए शिवबाबा को याद करना है। वही पण्डा है सभी को ले जाने वाला। भक्ति को कहा जाता है रात। ज्ञान को कहा जाता दिन। रात और दिन में बहुत फर्क होता है ना। सो भी यह तो बेहद की बात है। नई दुनिया और पुरानी दुनिया में तो बहुत फर्क होता है। अभी देहली में बड़े2 मकान बन रहे हैं तो बच्चों की दिल होती है इतनी ऊँच ते ऊँच पढ़ाई ऊँच ते ऊँच मकान में हम पढ़ावें तो बड़े2 लोग जागेंगे। एक एक को बैठ समझाना पड़ता है। वास्तव में पढ़ाई वा शिक्षा देने लिए एकान्त में स्थान होते हैं। ब्रह्मज्ञानियों के भी आश्रम शहर से दूर2 होते हैं। और नीचे ही रहते हैं। इतने ऊँची मंजिल पर नहीं रहते हैं। अभी तो तमोप्रधान होने से शहर में अन्दर घुस पड़े हैं। वह ताकत खत्म हुई पड़ी है। इस समय सभी की बैटरी खाली हो गई है। सन्यासियों की बैटरी भी खाली है। अभी बैटरी को कैसे भरना है यह बाप के सिवाय कोई भी बैटरी चार्ज कर न सके। बच्चों को बैटरी चार्ज करने से ही ताकत आनी है। इसके लिए मुख्य है याद। इसमें ही माया के विघ्न पड़ते हैं। कोई तो सर्जन के आगे सच बताते हैं, कोई छिपा लेते हैं। अन्दर में जो खामियाँ हैं वह बाप को बतलाना पड़े ना। इस जन्म में जो पाप किये हैं वह अविनाशी सर्जन के आगे वर्णन करना चाहिए। नहीं तो वह दिल अन्दर खाता रहेगा। सुनाने के बाद फिर खावेगा नहीं। अन्दर ही रख देना वह भी नुकसान कारक है। जो सच्चे2 बच्चे बनते हैं वह सभी बाप को बतला देते हैं। इस जन्म में यह यह पाप किये हैं। दिन प्रतिदिन बाप जोर देते रहते हैं। यह तुम्हारा अन्तिम जन्म है। तमोप्रधान से पाप तो जरूर बहुत होते होंगे। बाप समझाते हैं मैं बहुत जन्मों के अन्त में जो नम्बरवन पतित हैं उनमें ही प्रवेश करता हूँ; क्योंकि इनको ही फिर नम्बरवन में जाना है। बहुत मेहनत करनी पड़ती है। इस जन्म में पाप किये हुए हैं तो कइयों को पता भी नहीं पड़ता है कि हम यह क्या करते हैं। सच नहीं बतलाते हैं। कोई2 सच बतला देते हैं। बाप ने समझाया है कर्म–इन्द्रियाँ शान्त तब होगी जबकि कर्मातीत अवस्था बनती है। जैसे मनुष्य बूढ़े होते हैं तो डिस–चार्ज आदि होना आटोमेटकली बन्द हो जाता है। इस ज्ञान में तो छोटेपन में ही सब बन्द हो जाना चाहिए। अगर योगबल में मजबूत हो रहे तो इन सभी बातों की अन्त हो सकती है। वहाँ कोई ऐसी गंदी बीमारी, किचड़–पट्टी आदि होती ही नहीं। मनुष्य बड़े ही साफ रहते हैं। वहाँ है ही राम–राज्य, यहाँ है रावण–राज्य। तो अनेक प्रकार के गंदगी आदि की बीमारियाँ हैं। सतयुग में यह कुछ भी होता नहीं। बड़ी ही सफाई रहती है। बात मत पूछो। नाम ही कितना फर्स्ट क्लास है स्वर्ग, हेविन, नई दुनिया। बाप ने समझाया है भक्तिमार्ग को कहा जाता है ठगती मार्ग।

बहुत ठगाया जाता है। बड़े–बड़े ठग होते हैं। उनका भी कोई दोष नहीं। ..... कोई ठग, पापात्मा है। बाप बैठ समझाते हैं। इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही तुम यह सभी बातें सुनते हो। कल नहीं सुनते थे। कल मृत्युलोक के मालिक थे, आज तुम अमरलोक के मालिक बनते हो। निश्चय हो जाता है कल मृत्युलोक में थे। अभी संमगयुग पर आने से अमरपुरी में जाने लिए तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। पढ़ाने वाला भी अभी मिला है। अच्छी रीति पढ़ते हैं तो पैसा आदि भी कमाते हैं। बलिहारी पढ़ाई की कहेंगे। यह भी ऐसे हैं। इस पढ़ाई से तुम बहुत ही ऊँच पद पाते हो अभी तुम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हो। कल कलियुग में थे, आज यहाँ। रात दिन का फर्क पड़ जाता है। रात भक्तिमार्ग को कहा जाता है। ज्ञान बुद्धि में आ जाने से फिर भक्तिमार्ग आपे ही छूट जाता है। कहना नहीं पड़ता। कल तुम घोर–अंधियारी रात में थे। अभी तुम रोशनी में हो। यह भी सिवाय तुम बच्चों के और किसको मालूम नहीं है। तुम भी फिर घड़ी2 भूल जाते हो। पुरानी दुनिया में चले जाते हो। भूलना माना पुरानी दुनिया में चले जाना। अभी तुम संगमयुगी ब्राह्मणों को मालूम है, आत्मा जानती है हम कलियुग में नहीं हैं। यह तो सदैव ही याद रखना है। हम नये विश्व के मालिक बन रहे हैं। बाप हमको पढ़ाते ही हैं नई दुनिया में जाने लिए। यह है शुद्ध अहंकार। वह है अशुद्ध अहंकार। तुम बच्चों को तो कब अशुद्ध ख्यालात भी नहीं आनी चाहिए। पुरुषार्थ करते करते आखरीन पिछाड़ी में रिजल्ट निकलेगी। बाप समझाते हैं इस समय सभी पुरुषार्थी है। पढ़ रहे हैं। इम्तहान का समय अभी नजदीक होता जाता है। तो नम्बरवार पास हो फिर ट्रान्सफर हो जाते हैं। तुम्हारी है बेहद की पढ़ाई जिसको सिर्फ तुम ही जानते हो। तुम कितना समझाते हो। नये2 आते रहते हैं। बेहद के बाप से बेहद का वरसा पाने लिए भल दूर रहते हैं फिर भी सुनते2 निश्चय बुद्धि हो समझते हैं ऐसे बाबा के सम्मुख भी जाना चाहिए। जिस बाप ने बच्चों को पढ़ाया है ऐसे बाप से सम्मुख तो जरूर मिलना चाहिए। समझ करके ही यहाँ आते हैं। कोई न समझे हुए हैं तो भी यहाँ आने से समझ जाते हैं। बाप भी कहते हैं दिल में कोई भी बात हो, कुछ समझ में न आता हो तो भल पूछो। बाप तो चकमक है ना। जिनकी तकदीर में है वह अच्छी रीत पकड़ लेते हैं। तकदीर में न है तो फिर खलास। सुना अनसुना कर देते हैं। तो यहाँ कौन बैठ पढ़ाते हैं? भगवान, जिसका नाम है शिव। शिवबाबा से हमको स्वर्ग की बादशाही मिलेगी। फिर कौन सी पढ़ाई। तुम कहेंगे हमको शिवबाबा पढ़ाते हैं जिससे 21 जन्मों के लिए बादशाही मिलनी है। ऐसे2 समझाते2 ले आते हो। कोई पूरा न समझने कारण इतनी सर्विस नहीं कर सकते हैं। बन्धन के जंजीरों में जकड़े रहते हैं। शुरू में तुम कैसे अपन को जंजीरों से छुड़ाकर आये। जैसे कि कोई मस्ताने होते हैं। यह भी ड्रामा में पार्ट था तो कशिश हुई। ड्रामा अनुसार भट्ठी बननी थी। जीते जी बने फिर कोई माया के तरफ चले गये। युद्ध तो होती है ना। माया देखती है इसने बड़ी हिम्मत दिखाई है, अब हम भी ठोक कर देखते हैं कि पक्के हैं। कितनी बच्चों की सम्भाल होती थी। सभी कुछ सिखलाते थे। तुम बच्चे एलबम में चित्र आदि बैठ देखते हो। सिर्फ चित्र देखने से भी समझ न सके। कोई बैठ समझावे क्या क्या होता था, कैसे भट्टी में पड़े थे। फिर कोई कैसे निकले, कोई कैसे। जैसे रुपये छपते हैं तो भी कोई2 खराब हो पड़ते हैं। यह भी ईश्वरीय मशीनरी है। ईश्वर बैठ धर्म की स्थापना करते हैं। यह बात किसको भी पता नहीं है। बाप को बुलाते भी हैं; परन्तु जैसे कि तवाई। माया रावण एकदम तवाई बना देती है। शिवबाबा की पूजा भी करते हैं फिर कह देते हैं सर्वव्यापी है। यह सर्वव्यापी कैसे हो सकता। कितने पत्थर बुद्धि बेसमझ बन जाते हैं। शिवबाबा कहते हैं मैं फिर सर्वव्यापी कैसे हो सकता हूँ। बाबा कहते हो फिर सर्वव्यापी कैसे होगा। पूजा करते हैं, उस चीज़ को शिव कहते हैं। ऐसे थोड़े ही कहते हैं इसमें शिव बैठा है। अभी फिर पत्थर भित्तर में कहना यह कैसे हो सकता। सभी भगवान ही भगवान है। भगवान तो अनलिमिटेड तो नहीं होगा ना। तो बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। कल्प पहले भी समझाया था। बच्चे भिन्न2 आते हैं। गाइड बनकर आते हैं।

साथ में उन्हों की देखभाल करेंगे। बहुत आ जाते हैं तो सम्भालने के लिए पण्डा भी ले आते हैं। यह पण्डे यहाँ से फिर वहाँ जावेंगे। अपने शान्तिधाम। तो सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। तुम बच्चे फिर औरों को सुनाते हो। बाप तो एक जगह बैठा रहता है। बाबा बाहर जाये इतना सभी साज मशीनें आदि उठाना पड़े। कितने कारोबार होते हैं। बच्चों को एक दिन भी मुरली नहीं मिलती है तो कितना चिल्लाते हैं। गवर्मेन्ट का कारण बन जाता है कर ही क्या सकते। जिनमें ज्ञान है वह तो बिगर मुरली भी बैठ समझाते हैं। बाप तो सिर्फ कहते हैं कि अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। मूल बात ही यह है। जो अच्छे बुद्धिवान होंगे वह समझ जावेंगे। पवित्र जरूर बनना है। कहने की भी दरकार नहीं। कोई कोई को कहना पड़ता है। एड्युकेशन मिनिस्टर आदि भी चाहते हैं बच्चों की चलन अच्छी हो तो समझाना पड़ता है। यहाँ चलन सभी की हे खराब क्योंकि पतित अपवित्र हैं। पवित्र बनें तो चलन भी बहुत अच्छी इन देवताओं जैसे हो जाये। तुम भी योगबल से पवित्र बनते हो। तो यह बनते हो। बहुत खुशी होती है। समझ जाते हैं तो झट कहते हैं बाबा हम 5000 वर्ष के बाद ....प के पास आये हैं। इस बात को सिवाय तुम बच्चों के कोई भी समझ नहीं सकते। भल कितना भी अपन को (को)ई भगवान कहलाते हैं, फॉलोअर्स को फंसाते हैं; परन्तु यह बातें कब कोई की बुद्धि में आ ही नहीं सकता। बच्चियाँ ..... जिनको साथ में ले आती हैं तो उन्हों को सिखलाकर लाती हैं बाबा ऐसे ऐसे प्रश्न पूछेंगे। जो अच्छे समझदार होंगे कहेंगे बाबा आप आप एक बार पूछते हो हम तो अनेकानेक बार कल्प कल्प मिले हैं। यह तो ..... तुम बच्चों की स्मृति में आया है ना। हम हर 5000 वर्ष बाद बाप के साथ मिलते हैं। यह चक्र फिरता ही रहता है। बाबा जीत पहनाते हैं, रावण फिर हार खिलाती है। आधा2 है ना। हार से क्या होता है, जीत से क्या होता है वह तो बुद्धि में आ ही जाता है। बाप कहते हैं पढ़ाई तो बिल्कुल ही सहज है। पंडित तो बड़े2 अच्छे2 फर्स्ट क्लास बन जाते हैं; परन्तु याद की यात्रा में बहुत कमी रह जाती है। उनको बढ़ाना चाहिए ..... किसको तीर लगे। कहते हैं बाबा तीर बड़ा मुश्किल किसको लगता है। मरते ही नहीं हैं। समझते ही नहीं। (बा)प का कोई बनत ही नहीं। बाप भी कहते हैं। बच्चे कोटों में कोऊ ही बाप के बनेंगे। वह झट मालूम पड़ जाता है। अभी बच्चों को स्वदर्शनचक्र तो फिराना ही है। एक आँख में शान्तिधाम। एक आँख में है सुखधाम। यह ..... याद कर सकते हो ना। तुम पहले2 सुखधाम में आते हो। फिर दुखधाम में आते हो। बाप को याद करो ..... सुखधाम को याद करो। बाप काम बहुत ही थोड़ा देते हैं। यह है दुखधाम। यह पैगाम सिर्फ देना है। .....धाम ले जाने वाला बाप ही है। यह सदैव बुद्धि में रहे। बाप सदैव वरसा देते हैं। श्राप वा दुख कब देते (नहीं)। हरेक समझ सकते हैं। हम किस प्रकार का फूल हूँ। फूलों में भी नम्बरवार होते हैं। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को नमस्ते।

डायरेक्शनः– "बम्बई, देहली, अमृतसर, करनाल तीनों चारों सेन्टर्स में ईश्वरीय रूहानी युनिवर्सिटी (कोचिंग क्लासेज) ..... गये हैं। खास कन्याओं को ईश्वरीय नॉलेज सिखलाने लिए। जहाँ 3 मास का कोर्स सीखेंगे। 3 मास में प्रदर्शनी म्युजियम में समझाने लायक बन जाये। जिस सेन्टर्स पर ऐसी कन्याएँ आती हैं, जो यह ईश्वरीय पढ़ाई ..... ने, पढ़ाने चाहे, आसुरी पढ़ाई से तो पतित बन पड़ती हैं। इस पढ़ाई से अपना जीवन और औरों का न हीरे जैसा अर्थात् देवी–देवता बना सकती है। जो विश्व की बादशाही का मालिक बन सकती हैं जिनको यूनिवर्सिटी में कोचिंग लिए(ट्रेनिंग लिए) दाखिल होना हो सो बाप दादा को मधुबन में अपना नाम .....शन पूरा लिख सकते हैं वा ब्राह्मणी द्वारा लिखवा सकती हैं। और भी ईश्वरीय युनिवर्सिटी में .... होने की नेम पूछने से समझाई जा सकती है।"

–: विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है? :–